Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. बबीता शर्मा
(सहायक आचार्य)
टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
रसीद खान
टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में "उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन" किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के टोंक जिले के विभिन्न राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामान्य शैक्षिक चिंता मापने के लिए डॉ. वी. पी. शर्मा तथा कॅरियर निर्णय क्षमता परीक्षण स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में राजकीय एवं गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Keywords:- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शैक्षिक चिंता एवं कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता।

प्रस्तावना :–

कॅरियर का चयन केवल व्यक्तिगत रुचि या योग्यता पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह समाज एवं देश की 'आर्थिक संरचना' से भी जुड़ा होता है। भारत जैसे विकासशील देश में अब भी लगभग 64 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं प्राथमिक क्षेत्र से जुड़ी हुई है, जबकि मात्र 13 प्रतिशत द्वितीयक क्षेत्र तथा 20 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र से संबद्ध है। इसका अर्थ है कि आज भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी ऐसे क्षेत्रों की ओर झुकाव रखते हैं जहाँ रोजगार के अवसर सीमित हैं। दूसरी ओर विकसित देशों में स्थिति इसके विपरीत है, जहाँ औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र में अधिक लोग संलग्न रहते हैं। यही असमानता हमारे देश में 'कॅरियर निर्णय क्षमता' को और अधिक जटिल बनाती है। जब छात्र के समक्ष अनेक विकल्प होते हैं चिकित्सा, अभियंत्रण, प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, शिक्षण, रक्षा सेवाएँ आदिकृतो वह अक्सर चिंता ग्रस्त' हो जाता है और यह चिंता उसकी निर्णय लेने की क्षमता को बाधित करती है।

'शैक्षिक चिंता' का विद्यार्थी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सामान्यतः चिंता को बाधा माना जाता है क्योंकि यह सीखने की गति को धीमा करती है, किन्तु कई बार यही चिंता विद्यार्थियों को अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित भी करती है। बुग्लेस्की के अनुसार अवधान सीखने का प्रमुख तत्व है, और इसका मूल स्रोत भी चिंता ही है। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थियों में आवश्यक सीमा तक सकारात्मक चिंता उत्पन्न करे, जिससे वे शैक्षिक प्रक्रिया में सक्रिय बने रहें। लेकिन यदि चिंता की मात्रा आवश्यकता से अधिक हो जाती है तो विद्यार्थी शैक्षिक कार्यों से बचने लगता है और यदि यह बहुत कम हो तो सीखने की गति धीमी हो जाती है। यही संतुलन तय करता है कि छात्र आगे चलकर अपने कॅरियर संबंधी निर्णय कितने तार्किक और ठोस ले पाएगा।

कॅरियर निर्णय केवल विद्यार्थी की व्यक्तिगत आकांक्षाओं या विद्यालयी वातावरण पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि इसमें 'सामाजिक एवं पारिवारिक प्रभाव' भी अत्यधिक महत्त्व रखते हैं। यदि माता–पिता प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं तो उनके बच्चे भी वैसा ही बनने का सपना देखते हैं। वहीं मित्र–मण्डली भी निर्णय को प्रभावित करती है। अनेक बार विद्यार्थी अपने मित्रों द्वारा चुने गए विकल्पों को ही अपनाने लगते हैं। साथ ही, रोजगार के अवसरों की उपलब्धता भी निर्णय का बड़ा कारक है। पहले जहाँ केवल माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरी पाना संभव था, वहीं आज उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बिना अच्छे अवसर मिलना कठिन है। बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा ने छात्रों के सामने विकल्प तो बढ़ा दिए हैं परंतु निर्णय को और अधिक जटिल भी बना दिया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'शैक्षिक चिंता, विद्यालयी वातावरण और कॅरियर निर्णय क्षमता' एक–दूसरे से गहरे रूप में संबद्ध हैं। यदि चिंता संतुलित है, विद्यालयी वातावरण सकारात्मक और सहयोगात्मक है तथा शिक्षक व अभिभावक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं तो विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं, रुचियों एवं योग्यता के अनुरूप सही कॅरियर का चयन कर सकता है। किंतु यदि विद्यालयी वातावरण नकारात्मक है, चिंता अत्यधिक है

और पारिवारिक एवं सामाजिक दबाव अधिक हैं, तो विद्यार्थी की निर्णय क्षमता प्रभावित होती है और वह भ्रमित होकर अनुचित विकल्प चुन सकता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

एक आदर्श शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह केवल ज्ञान का संप्रेषणकर्ता न होकर विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का मार्गदर्शक बने। विशेषकर उच्च माध्यमिक स्तर पर, जब विद्यार्थी किशोरावस्था की संवेदनशील स्थिति में होते हैं, तब शिक्षक को उनकी 'संवेगात्मक समस्याओं' की पहचान करनी चाहिए और उनका सकारात्मक समाधान प्रस्तुत करना चाहिए। किशोरावस्था को मनोविज्ञानियों ने '"आंधी और तनाव की अवस्था" कहा है। इस अवस्था में किशोर न केवल शारीरिक परिवर्तनों से गुजरते हैं, बल्कि वे गहन भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तनों का भी अनुभव करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इस अवस्था में 'भविष्य की चिंता' और 'परीक्षा संबंधी दबाव' उनके मानसिक संतुलन को प्रभावित करने लगते हैं।

चिंता विशेषकर 'शैक्षिक चिंता' इस आयु वर्ग में सबसे गहरा प्रभाव डालने वाला संवेग है। यह वह अवस्था है जब विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के मूल्यांकन को लेकर असुरक्षित अनुभव करते हैं। परीक्षाओं के दौरान यह चिंता चरम पर पहुँच जाती है और यदि समय रहते इसका समाधान न हो तो विद्यार्थी अवसादग्रस्त हो सकते हैं, यहाँ तक कि आत्महत्या जैसे कठोर कदम भी उठा लेते हैं। इस प्रकार की घटनाएँ समाज के लिए गहरी चिंता का विषय हैं। वास्तव में, जब चिंता संतुलित मात्रा में होती है तो यह विद्यार्थियों को अधिक प्रयास करने और सफलता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। किंतु जब यही चिंता असंतुलित या अत्यधिक हो जाती है, तब यह न केवल उनके 'शैक्षिक प्रदर्शन' को बाधित करती है बल्कि उनके 'करियर संबंधी निर्णय' को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

करियर निर्णय क्षमता का विकास केवल व्यक्तिगत योग्यता और रुचि पर आधारित नहीं होता, बल्कि इसमें अनेक बाह्य और आंतरिक कारकों की भूमिका होती है। विद्यालयी वातावरण इन कारकों में से प्रमुख है। विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं है बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला भी है। यहाँ विद्यार्थी आत्मबोध, आत्म–अनुशासन, मूल्यबोध, सामाजिकता, सहयोग और नेतृत्व जैसे गुणों का विकास करते हैं। यदि विद्यालय का वातावरण सकारात्मक, सहयोगात्मक और प्रोत्साहन देने वाला है, तो विद्यार्थी आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं और अपने भविष्य से संबंधित निर्णय लेने में अधिक सक्षम होते हैं। इसके विपरीत, यदि विद्यालय का वातावरण अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, अंक–प्रधान या दमनकारी है, तो विद्यार्थी की चिंता का स्तर बढ़ जाता है और उसकी निर्णय क्षमता प्रभावित होती है।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या केवल उच्च अंक या अच्छे परीक्षा परिणाम किसी छात्र की करियर निर्णय क्षमता को सुनिश्चित कर सकते हैं? वस्तुतः, अच्छे अंक आवश्यक अवश्य हैं, लेकिन पर्याप्त नहीं। कैरियर चयन एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें छात्र की रुचि, योग्यता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक अपेक्षाएँ और रोजगार के अवसरकृ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि किसी छात्र को अच्छे अंक प्राप्त होते हैं लेकिन उसे विद्यालय में उपयुक्त मार्गदर्शन, सहयोगात्मक वातावरण और भविष्य की दिशा चुनने का अवसर नहीं मिलता, तो वह करियर संबंधी निर्णय में असमंजस का शिकार हो सकता है।

अतः करियर निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले चरों की पहचान करना अत्यंत आवश्यक है। 'शैक्षिक चिंता, विद्यालयी वातावरण और व्यक्तिगत अभिप्रेरणा' जैसे चर विद्यार्थी की निर्णय क्षमता को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यदि इन चरों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए और उचित परामर्श एवं मनोवैज्ञानिक सहयोग प्रदान किया जाए, तो विद्यार्थियों की करियर निर्णय क्षमता को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। यह न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है बल्कि समाज और राष्ट्र के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि सुविचारित करियर निर्णय ही अंततः 'मानव संसाधन' की गुणवत्ता को निर्धारित करता है।

शोध कथन :–

"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

उच्च माध्यमिक स्तर

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य के कक्षा–9 से कक्षा 12 तक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से है, जिनकी आयु किशोरावस्था अर्थात 13 से 18 वर्ष के मध्य हो।

विद्यार्थी

विद्यालय, महाविद्यालयों में एक निश्चित समायावधि में पाठ्यक्रम का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक अध्ययन प्राप्त करने वाला विद्यार्थी कहलाता हैं।
विनोद शास्त्री के अनुसार – ''विद्यार्थी वह दर्पण है जिसमें शिक्षक अपना प्रतिबिम्ब देखता है, विद्यार्थी समाजमितीय दृष्टिकोण में शिक्षक द्वारा स्थापित नवीन पादप है।''

शैक्षिक चिंता –

चिंता का अर्थ एक ऐसी कष्टदायक मानसिक स्थिति से है जिसमें भारी विपत्तियों की आशंका से व्यक्ति व्याकुल होता है। चिंता का विषय व्यक्ति स्वयं होता है,

उसकी व्याकुलता स्वयं उसकी मानसिक स्थिति जन्य होती है अर्थात चिंता विषयगत व्याकुलता है जिसका वाह्य पदार्थों से सम्बन्ध नहीं होता। चिंता हृदयगत छिपी हुई परेशानी के प्रति मस्तिष्क की प्रतिक्रिया है। किसी विद्यार्थी की अपनी पढ़ाई के प्रति चिंता, शैक्षिक चिंता कहलाती है। चिंता को देने वाले विषयगत कारण सचेतन भी हो सकते हैं। वास्तव में शैक्षिक चिंता अधिगम में बाधा भी डाल सकती है और इसको प्रेरित भी कर सकती है।

कॅरियर निर्णय क्षमता–

कॅरियर निर्णय क्षमता एक तरह का समस्या समाधान व्यवहार होता है जिसमें विद्यार्थियों के सामने कॅरियर के कई विकल्प होते हैं उनमें से किसी एक का चुनाव करना होता है। यह एक ऐसा पहलू है जिसमें किशोर कॅरियर विकल्प को निष्चित करने की निर्णय क्षमता रखता है।

प्रस्तुत शोध में कॅरियर निर्णय क्षमता का प्रयोग विद्यार्थयों के लिए किया गया है। जिसमें कॅरियर निर्णय क्षमता का तात्पर्य ऐसी स्थिति से लगाया गया है जिसमें विद्यार्थी अपनी रुचि, योग्यता, अवसरों की उपलब्धता, मित्र एवं अभिभावकों के सहयोग, सामाजिक–आर्थिक स्तर, राजनीतिक स्थिति एवं व्यावसायिक जागरूकता आदि कारकों के आधार पर कॅरियर की निश्चितता के निर्णय से है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

(1) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(2) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ :–

(1) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(2) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्ष :–प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के टोंक जिले के विभिन्न राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों तथा गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 300 विद्यार्थियों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

3. चिंता परीक्षण मापनी (डॉ. वी. पी. शर्मा)
4. कॅरियर निर्णय क्षमता परीक्षण मापनी (स्वनिर्मित)

प्रदत्तों का विष्लेषण व विवेचन –

(1) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	सहसम्बन्ध	सार्थकता का स्तर
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक चिंता	300	48.51	9.358	0.993	स्वीकृत
गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कॅरियर की शैक्षिक चिंता	300	49.29	9.883		

व्याख्या :– परिकल्पना संख्या 1 के राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

(2) राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता का स्तर
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों	300	115.14	8.241	0.585	स्वीकृत

के विद्यार्थियों के कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता					
गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता	**300**	**22.39**	**7.668**		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से कम है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शैक्षिक सुझाव–

- किशोर विद्यार्थियों को अपने 'रुचि क्षेत्र' की पहचान करके उसी के अनुरूप कॅरियर का चयन करना चाहिए।
- केवल रुचि ही नहीं, बल्कि अपनी 'क्षमताओं एवं योग्यताओं' का भी वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना आवश्यक है।
- कॅरियर चयन करते समय उस क्षेत्र में 'भविष्य के अवसरों' एवं 'रोजगार संभावनाओं' का विश्लेषण करना चाहिए।
- कॅरियर चयन के दौरान 'अभिभावकों की आर्थिक स्थिति' का ध्यान रखना चाहिए, ताकि बीच में पढ़ाई अधूरी न छूटे।
- विद्यार्थियों को अपने 'मित्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों' के साथ स्वस्थ सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।
- राष्ट्रीय एवं 'राजनीतिक परिस्थितियों' का भी अवलोकन करना चाहिए क्योंकि ये रोजगार के अवसरों को प्रभावित करती हैं।

भावी शोध हेतु सुझााव –

1. भावी शोध में उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक चिंता एवं विद्यालयी पर्यावरण का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता का अध्ययन किया जा सकता है
2. प्रस्तुत शोध विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं विद्यालयी पर्यावरण का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता जानने के लिये किया गया है। यदि विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता एवं विद्यालयी पर्यावरण का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता विषयों पर अलग–अलग अनुसंधान, बड़े एवं व्यापक प्रतिदर्श लेकर किया जाये तो सार्थक एवं महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं।
3. प्रस्तुत अध्ययन को अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं विद्यालयी पर्यावरण का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता विषय पर विस्तृत प्रतिदर्श लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।
4. अग्रेंजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यालयों, केन्द्रीय एवं आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता एवं विद्यालयी पर्यावरण का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय–क्षमता पर अनुसंधान सम्पादित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
2. गुप्ता, निर्मला (1989): 'मैनुअल फॉर इण्डियन अडेप्टेशन ऑव कॅरियर मैच्योरिटी इन्वेन्टरी', आगरा, नेशनल साइकोलॉजिकल कारपो.
3. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
4. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेष मारवाह (2005) '' षिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर पृष्ठ संख्या (407–430)
5. गोयल, जितेंद्र सिंह, (2017). विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का जीविका वरीयता के सन्दर्भ में समायोजन एवं नैराश्य का एक अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
6. सिंह, के. (2011).12वीं में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों का लिंग के आधार पर व्यावसायिक निर्णय एवं व्यावसायिक परिपक्वता का अध्ययन। जर्नल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एंड रिसर्च, 28, 371–379.
7. तिवारी एवम् मोरमट्ट (1993), किशोर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध में चिन्ता ने आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन, उद्घृत साधना मिश्र पी.एच.डी. मनोविज्ञान, कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर।
8. सिंह, रामपाल और शर्मा, ओ.पी. (2008), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
9. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।